ओ३म्

भारत के जगद्गुरु होने का अर्थ व उपाय क्या है?

लेखक- आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

सोलहवीं लोकसभा के चुनाव ने भारत को एक महान् देशभक्त नेतृत्व **श्री नरेन्द्र मोदी** के रुप में प्रदान किया है, जिन्होंने काशी में भारत को जगद्गुरु बनाने की इच्छा का संकेत करते हुए कहा था, **"जब भारत जगद्गुरु था तब काशी नगर राष्ट्रगुरु था और यदि भारत को पुनः जगद्गुरु बनाना है तो काशी को राष्ट्रगुरु बनाना होगा।"** काशी को राष्ट्रगुरु बनने का संकेत स्पष्ट है कि भारत की प्राचीन वैदिक विरासत व देववाणी संस्कृत भाषा का पुनरोदय होने से ही यह राष्ट्र पुनः जगद्गुरु बन सकता है। इधर श्री मोदी के मन्त्रिमण्डल की एक सदस्या श्रीमती स्मृति ईरानी जिन पर भारत के मानव संसाधन विकास मंत्रालय का बहुत महत्वपूर्ण दायित्व है, ने वैदिक साहित्य पढ़ाने की वकालत की है। यह देश के लिए बहुत ही शुभ संकेत है। यहाँ कुछ कथित प्रबुद्ध जनों को श्री मोदी के कथनों में परस्पर विरोध प्रतीत हो सकता है। उनकी दृष्टि में मोदी जी एक ओर अत्याधुनिक विज्ञान, तकनीक के द्वारा राष्ट्र को अमेरिका, चीन व यूरोपीय देशों की बराबरी पर लाने की बात करते हैं तो दूसरी ओर वे भारत की प्राचीन परम्परा के पुनरोदय की बात करते हैं। क्या यह परस्पर विरोध नहीं है?

अंग्रेजी भाषा के एकछत्र विश्वव्यापी शासन तथा वर्तमान विज्ञान व टैक्नोलोजी के इस युग में वेदादि की बात करना कहाँ तक युक्ति संगत है, वह भी वेदादि शास्त्र व संस्कृत भाषा के बल पर भारत को विश्व का गुरु बनाने का स्वप्न देखना व दिखाना कहाँ तक उचित है, यह अवश्यमेव विचारणीय है। वर्तमान विश्व में तो दूर की बात है, अपने देश में भी इस प्रकार की बातों पर प्रबुद्ध वर्ग विश्वास नहीं करता। मेरी दृष्टि में इसके दो कारण हैं। प्रथम यह कि **भारत का नागरिक विशेषकर प्रबुद्ध युवा तन से भारतीय तथा मन व आत्मा से पूर्णतः मैकाले का भक्त हो चुका है। उसे भारतीयता की वह कोई बात अच्छी नहीं लगती जो पूर्व काल की संस्कृति, सभ्यता व शिक्षा की समर्थक हो। दूसरा कारण यह भी है कि भारतीय वैदिक विद्या वा संस्कृत भाषा की वकालत करने वालों ने कोई ऐसा महत्वपूर्ण चमत्कार वर्तमान समय में नहीं किया, जिसे पाश्चात्य विद्या विज्ञान के सम्मुख कुछ भी महत्व मिल सके।** बड़े-२ कथित वैदिक विद्वान्, संस्कृत भाषा के पण्डित, दर्शनाचार्य सभी पाश्चात्य विज्ञान व टैक्नोलोजी के सम्मुख नतशिर होकर उनका सगर्व प्रयोग कर रहे हैं। वेद, दर्शन आदि का नाम लेकर जो संस्थाएं चल रही हैं, जिन विद्वानों की आजीविका चल रही है, उनके बच्चे भी संस्कृत वा वैदिक विद्या को नहीं पढ़ते। पिता वा गुरु व नेता संस्कृत भाषा व आर्ष विद्या की बात तो करते हैं परन्तु पुत्र, शिष्य व अनुयायी अंग्रेजी भाषा व पाश्चात्य मैकाले की शैली की शिक्षा न केवल देश अपितु विदेश में जा-जाकर ग्रहण करते हैं, तब वेदादि शास्त्रों व संस्कृत भाषा को कौन पढ़ेगा और कैसे इससे भारत को विश्व के उच्च विकसित विज्ञान का गुरु बनाया जा सकेगा? यह बात गम्भीरता से सोचने का अवसर किसी के पास नहीं है। यदि श्री मोदी आधुनिक विज्ञान व टैक्नोलोजी का बहु आयामी विकास करके स्पर्धा में चीन, अमेरिका, फ्रांस, जापान व जर्मनी जैसे विकसित देशों से आगे जाकर भारत को जगद्गुरु बनाने की बात करते हैं, तब भी जगद्गुरु का स्वप्न पूर्ण नहीं होगा। **भले ही हम स्वच्छ प्रशासन, प्रबल पुरुषार्थ व भ्रष्टाचार मुक्त समाज बनाकर विश्व में सर्वोत्कृष्ट कम्प्यूटर, अन्तरमहाद्वीपीय मिसाइलें, परमाणु बम, हाइड्रोजन बम, न्यूट्रॉन बम जैसे घातक अस्त्र बना लें। ऐलोपैथी चिकित्सा, अन्तरिक्ष विज्ञान, कृषि विज्ञान आदि में हम क्रान्तिकारी विकास करके भारत की शिक्षा पद्धति को उच्चतम शिखर पर पहुँचा कर ऐसे विश्वविद्यालयों, आई.आई.टी. आई.आई.एम. व ऐम्स जैसे शिक्षण संस्थानों को विश्व के सर्वोत्कृष्ट स्थान दिलाने में कभी सफल हो जायें। हमारा 'इसरो' अमरीकी अंतरिक्ष एजेंसी 'नासा' को पीछे छोड़ दे और भले ही हम विश्व की सबसे बड़ी प्रयोगशाला 'सर्न' से बड़ी प्रयोगशाला बना कर संसार के सभी देशों के मार्ग दर्शक व नेता बन जायें परन्तु नैतिकता की दृष्टि से भारत को जगद्गुरु बनने हेतु यह पर्याप्त योग्यता व सामर्थ्य नहीं होगी।** आज भारत को आर्थिक महाशक्ति व आध्यात्मिक महाशक्ति भी बनाने की चर्चा कुछ उत्साही महानुभाव विभिन्न चैनलों से करते रहते हैं परन्तु मुझे लगता है कि जगद्गुरु, महाशक्ति, आध्यात्मिक व वैदिक सम्पदा इन चार शब्दों का यथार्थ भाव अभी तक समझा नहीं गया है। सस्ते सुन्दर स्वप्न देखने व दिखाने से भारत जगद्गुरु नहीं बन पायेगा। हाँ, मैं मोदी जी सहित ऐसे सभी देशभक्तों की इच्छा व प्रयास की सराहना अवश्य करता हूँ कि देश में ऐसा एक प्रधानमंत्री तो बना जो देश के उत्कर्ष की, उसे जगद्गुरु बनाने की बात तो करता है। प्रबल इच्छा तो करता है। जब देश के नेतृत्व की प्रबल इच्छा हो और ईमानदारी से अफसरशाही उस पर अमल भी करे, देश की जनता पूर्ण सहयोग करे तो भारत का जगद्गुरु बनना असम्भव तो नहीं है।

अब मैं उपर्युक्त उस बिन्दु पर आता हूँ कि देश को महान् वैज्ञानिक व आर्थिक शक्ति बनाने पर भी जगद्गुरु का पद हमारे देश को क्यों नहीं मिल सकता? इस विषय में मेरा मत है कि हम इन क्षेत्रों में जो भी उन्नति करेंगे, जो भी पढ़ेंगे वा पढ़ायेंगे, उन सब पर पश्चिमी वैज्ञानिकों व अर्थशास्त्रियों की ही छाया होगी।उन्हीं का ही पढ़ेंगे फिर भले ही

हम उनसे आगे क्यों न बढ़ जायें। **आज हमारी पीढ़ी जो भी पढ़ रही है, उसमें आयुर्वेद, हिन्दी, संस्कृत भाषा के अतिरिक्त कोई भी ऐसा विषय नहीं है, जिसका मूल प्राचीन भारतीय विद्या से सम्बन्ध हो, जिनकी पाठ्य पुस्तकों में प्राचीन भारतीय विद्वानों, ऋषियों का नाम भी विद्यमान हो।** हाँ, राजनीति शास्त्र व समाजशास्त्र आदि की कुछ पुस्तकों में भगवान् मनु आदि का नाम मिल सकता है। वर्तमान विद्वानों में महर्षि दयानन्द, महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानन्द आदि का नाम मिल सकता है। विज्ञान की पुस्तकों में सी.वी. रमन, सत्येन्द्रनाथ बोस, मेघनाथ साहा, होमी भाभा, जगदीशचन्द बसु आदि भारतीय वैज्ञानिक तथा विदेश में रहने वाले भारतीयों में से चन्द्रशेखर सुब्रह्मण्यम, हरगोविन्द खुराना आदि कुछ वैज्ञानिकों के नाम व उनके सिद्धान्त हम पढ़ सकते हैं परन्तु इनके वैज्ञानिक बनने के पीछे कोई भारतीय प्राचीन विज्ञान कारण नहीं था बल्कि ये उसी विद्या को पढ़े थे, जिसको हमारे देशभक्त मैकाले की पाश्चात्य शिक्षा पद्धति नाम देकर निन्दा करते हैं। भारत में जो भी देशभक्त वा वेदभक्त कहाने वाले सामाजिक संगठन हैं, वे अपने विद्यालयों में वही पढ़ाते हैं, जिसकी वे मंच पर निन्दा करते हैं। **आज वेद, दर्शन, ब्राह्मणग्रन्थ आदि का जो स्वरूप भारत में पढ़ा वा पढ़ाया जा रहा है, क्या उसके आधार पर हम ऐसे वैज्ञानिक उत्पन्न कर सकते हैं? यदि नहीं तो भारत को कैसे जगद्गुरु बनाया जा सकता है? ऐसी स्थिति में यह विचार करना आवश्यक है कि भारत के जगद्गुरु होने का अर्थ क्या है?** इस विषय पर मेरा विचार यह है कि भारत के जगद्गुरु का अर्थ जानने से पूर्व हम यह जानने का प्रयास करें कि **भारत के भारत होने का अर्थ क्या है, आज भारत भारत रहा ही कहाँ है? वह तो आज इण्डिया बन चुका है।** पहले यह आर्यावर्त था फिर भारत फिर हिन्दुस्तान और अब इण्डिया बन गया। हिन्दुस्तान तक भी यह भारत स्वदेशी विचारधारा की नींव पर खड़ा था परन्तु अब यहाँ स्वदेशी कुछ भी दिखाई नहीं देता। इस देश का नाम जब आर्यावर्त था तब यह देश वास्तव में जगद्गुरु था व चक्रवर्ती राष्ट्र भी था। जब चन्द्रवंशी सम्राट् दुष्यन्त पुत्र भरत का इस देश में शासन था तब भी यह भारत जगद्गुरु व चक्रवर्ती राष्ट्र था। इसी महान् राजा के नाम से इस देश का नाम भारत है, ऐसा सर्वविदित है। महाभारत काल तक भी भारत के पास यह पद विद्यमान था। आज हम जिन नालंदा व तक्षशिला विश्वविद्यालयों की बात करते हैं। ये सभी महाभारत काल से बहुत काल पश्चात् के हैं। इस कारण उस समय की विद्या इस देश के आदिकाल से लेकर महाभारत काल की विद्या की अपेक्षा अति न्यून थी। यद्यपि इस मध्यकाल में आर्यभट्ट, वराहमिहिर, भास्कराचार्य, नागार्जुन एवं ब्रह्मगुप्त जैसे अनेक वैज्ञानिक व गणितज्ञ हुए जो अपने समय के विश्व विख्यात व्यक्ति थे। इस काल के संस्कृत भाषा के कवि व साहित्यकारों का मेरी दृष्टि में कोई महत्व इस कारण नहीं है क्योंकि ये सभी भले ही भाषा व व्याकरण के विद्वान् थे परन्तु सभी ने श्रृंगार रस में डूबकर भारत व मानवजाति को अश्लीलता की कीचड़ में ही धकेला है। गाली संस्कृत भाषा में दी जाये अथवा हिन्दी वा अंग्रेजी में परन्तु है तो अपराध ही। इन साहित्यकारों के हृदय में वेद व ऋषियों के सदाचार व ब्रह्मचर्य की शिक्षा नहीं होने से हर सदाचारी को इन्हें हेय दृष्टि से ही देखना चाहिए। दुर्भाग्य से आज संस्कृत साहित्य के नाम पर यही अपराध किया जा रहा है, जिससे संस्कृत भाषा का स्थान देववाणी के रूप में रहा ही नहीं है। इस कारण मेरा मत यह है कि जब तक भारत रामायण व महाभारत कालीन आर्य ऋषियों, देवों के महान् विज्ञान व तकनीक का विकास नहीं करेगा, उसे खोज नहीं सकेगा, तब तक हम भारत को जगद्गुरु बनाने का स्वप्न भी नहीं देख सकते। उस समय आयुर्वेद का जो उत्कर्ष था, वह आज की अत्यन्त विकसित ऐलोपैथी चिकित्सा पद्धति में भी नहीं है। युद्धरत योद्धाओं के घाव तत्काल भरने त्वचा का रंग रूप तत्काल ही पूर्ववत् करने की पद्धति आज कदाचित् विकसित नहीं है। श्रीराम व लक्ष्मण को नागपश से मुक्त करने हेतु महान् आयुर्वेदाचार्य गरुड़ ने केवल हाथ के स्पर्श से न केवल उन्हें मूर्छा से मुक्त किया अपितु उनके घाव भरकर त्वचा को भी पूर्ववत् तत्काल ही कर दिया था। आज रैकी चिकित्सा पद्धति अवश्य है परन्तु इतनी त्वरित गति से चिकित्सा करना उसका सामर्थ्य नहीं है। उस समय योद्धाओं को चिकित्सालय में महीनों भर्ती रहने का कहीं वर्णन नहीं है। रावण के पुष्पक विमान की यह विशेषता कि विधवा के बैठने पर विमान उड़ ही नहीं पाता था, यह कौन सी तकनीक थी? **वायव्य अस्त्र, आग्नेय अस्त्र, पर्जन्य अस्त्र, मोहिनी अस्त्र, वैष्णवास्त्र, आसुर अस्त्र, माहेश्वर अस्त्र, ऐन्द्रास्त्र, पाशुपत अस्त्र, ब्रह्मास्त्र, सुदर्शन चक्र, वज्र आदि अस्त्र न केवल महाशक्तिशाली थे अपितु इनमें से कुछ प्रयोक्ता के विचारों का अनुसरण करते हुए सीमित वा व्यापक लक्ष्य निर्धारित करने की दैवी तकनीक से सम्पन्न भी थे। यह तकनीक आज नहीं है** कि अणुअस्त्र को इस विचार से छोड़ा जाये कि वह एक लक्षित व्यक्ति का ही विध्वंस करेगा, अन्य को कोई हानि नहीं पहुँचायेगा। महात्मा नारायण का नारायणास्त्र जिसका प्रयोग अश्वत्थामा ने पाण्डवों पर किया था, वह निरस्त्र होकर शान्त खड़े रहने पर कोई क्षति नहीं पहुँचाता था और उसका सामना करने पर उग्रतर होता जाता था तथा प्रत्येक प्रयोक्ता के द्वारा पुनः प्रयुक्त नहीं किया जा सकता था, यह आर्यों की तकनीक अब किस देश के पास है? देवों, गन्धर्वों, असुरों की विमान विद्या की समता आज कौन सा देश कर सकता है? उस समय प्रत्येक अस्त्र का प्रतिरोधक अस्त्र होता था। आज वह किस देश के पास है? पिछले कुछ वर्ष पूर्व जयपुर के ऑयल डिपो में आग लगी और भारत के पेट्रोलियम मंत्री ने असहाय होकर कहा था कि हम आग के स्वतः शान्त होने की प्रतीक्षा ही कर सकते हैं। आज देश के पास आर्यों का पर्जन्य अस्त्र होता तो तत्काल वृष्टि कराके आग को रोक सकता था। **जापान के पास एण्टी एटम बम होता तो वहाँ महाविनाश नहीं होता। आर्यों के अस्त्र शत्रु को मारकर वापिस भी आ सकते थे। प्रक्षेपण के पश्चात् योद्धा यदि चाहता तो वापिस भी लौटा सकता था, आज यह तकनीक किस देश के पास है?** हम रामायण व महाभारत में कहीं यह भी नहीं पढ़ते कि इन विशाल युद्धों के पश्चात् पर्यावरण का प्रदूषण होकर कोई महामारी वा प्राकृतिक प्रकोप फैला हो। कौन सी टैक्नोलोजी थी कि महाविध्वंसकारी अस्त्रों के प्रयोग से लाखों जान जाने पर भी पर्यावरण पर कोई प्रभाव नहीं होता था। आकाश गमन करना, रूप बदलना, अदृश्य होना, लघु व विशाल रूप धारण करना, आदि जैसी सिद्धियों का होना कुछ समाजों में विशेषकर देवों, गन्धर्वों, असुरों, वानरों में साधारण बात थी। महर्षि पतंजलि के योगसूत्रों व उनके महर्षि व्यास भाष्य से इनका वैज्ञानिक आधार परिलक्षित

होता है, कोई इन्हें गम्भीरता से पढ़ने का यत्न तो करे। आज योग का यथार्थ स्वरूप कहीं लेशमात्र भी दिखायी नहीं देता। उस समय अध्यात्म व पदार्थ विज्ञान दोनों ही उत्कर्ष पर थे, तब यह देश जगद्गुरु भी था और चक्रवर्ती सम्राट भी।

अब हम विचार करते हैं कि इस सबका मूल कारण क्या था? **वस्तुतः हर देश व समाज को उत्कर्ष वा अपकर्ष तक पहुंचाने में सबसे बड़ा योगदान शिक्षा प्रणाली का ही होता है। उस समय सभी प्रकार का सदाचार ज्ञान, विज्ञान व तकनीक वेद, ब्राह्मणग्रन्थ, दर्शन, उपनिषदों से ही उत्पन्न थी। ऋषि भगवन्त साधना के द्वारा सृष्टि के सूक्ष्म रहस्यों तथा ब्रह्माण्ड में विचरती वेद की ऋचाओं के रहस्यों को प्रकट करके उन्हें प्रयोगात्मक रूप देकर नाना प्रकार की दिव्य तकनीक को जन्म देते थे।** वे जहाँ उच्च कोटि के योगी, तपस्वी हुआ करते थे, वहीं वे अनेक शस्त्रास्त्र व विमान विद्या में पारंगत होकर राष्ट्र व विश्व की सम्पूर्ण परिस्थिति पर सूक्ष्म दृष्टि रखकर क्षत्रियों को पूर्ण मार्गदर्शन व शस्त्रास्त्र प्रदान करते थे। उस समय वेदादि शास्त्रों को समझने की जो परम्परा थी, वह महाभारत के पश्चात् मानो लुप्त हो गयी और धीरे-२ वेदार्थ करने की परम्परा के स्थान पर केवल वेदपाठ मात्र आजीविका का साधन बन गया। हाँ, यह भी बात सत्य है कि वेदपाठियों ने भी वेद को अब तक सुरक्षित रखा, इसलिए सम्पूर्ण मानवजाति उनकी भी ऋणी है। वेद, ब्राह्मणग्रन्थ, अरण्यकग्रन्थ आज भी इस देश में विद्यमान हैं परन्तु इनको समझने की परम्परा लुप्त हो जाने से कोई विद्वान् भाष्यकार प्राचीन ऋषियों के ज्ञान विज्ञान व तकनीक को संकेत मात्र भी जान नहीं पाया है। **वेद भाष्यकारों में केवल महर्षि दयानन्द सरस्वती ही ऐसे दिखायी देते हैं, जिन्होंने महाभारत के बाद लुप्त वेदार्थ की परम्परा को समझा परन्तु समयाभाव के कारण वे अपना वेदभाष्य सांकेतिक ही कर सके। उन्होंने अपने सत्यार्थ प्रकाश में न केवल आर्यावर्त भारतवर्ष के वर्तमान पतन के साथ प्राचीन ऐश्वर्य का वर्णन किया है अपितु वैदिक आर्ष विद्या का ऐसा पाठ्यक्रम भी प्रस्तुत किया है, जिसके आधार पर भारत पुनः सच्चा जगद्गुरु व चक्रवर्ती राष्ट्र बन सके** परन्तु दुर्भाग्य यह है कि इस पाठ्यक्रम को न तो पढ़ने वाले रहे,न पढ़ाने वाले और न ही इन शास्त्रों के गूढ़ रहस्य को समझने समझाने की वह वैज्ञानिक पद्धति, आत्म साधना व तप ही रहे, जो इन शास्त्रों को समझ कर विश्व के आधुनिक विज्ञान की चकाचौंध को अपने वैज्ञानिक उत्कर्ष से प्रभावित व मार्गदर्शित कर सके। कहीं-२ कुछ गुरुकुलों में कुछ ग्रन्थों का पठन-पाठन चल रहा है परन्तु प्रतीत होता है कि इस परम्परा का बाह्य आवरण मात्र शेष है, अन्दर से नितान्त रिक्तता है, अन्यथा वेदविद्या विज्ञान आज कुछ तो करके दिखाता। इस अभागे हिन्दू समाज ने तो वेद के स्थान पर केवल गीता वह भी पाठमात्र, वाल्मीकि रामायण के स्थान पर रामचरित मानस, सच्चे पुराण शतपथ-ऐतरेय आदि ब्राह्मण ग्रन्थों के स्थान पर भागवत आदि नवीन पुराणों को ही अपने धर्म व विद्या के ग्रन्थ मान लिया। उस पर **पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली, खानपान, वेषभूषा, जीवनशैली का ऐसा रोग लगा कि स्वदेशीय स्वाभिमान, धर्म, संस्कृति एवं विद्या सब भस्म हो चुके हैं।** तब माननीय प्रधानमंत्री जी! कैसे जगद्गुरु बनायेंगे, आप इस देश को?

अस्तु, महर्षि दयानन्द के पश्चात् आर्य समाज के एक विद्वान् पं. भगवद्दत्त रिसर्च स्कॉलर ने वैदिक विज्ञान की परम्परा को समझने का प्रयास किया और अपने साहित्य में कुछ संकेत भी दिये। यदि इन दोनों विद्वानों को छोड़ दें तो आचार्य सायणादि के वेद भाष्य के आधार पर कोई प्राचीन वैदिक ज्ञान विज्ञान जानकर भारत को जगद्गुरु बनाने का स्वप्न देखता है, तो वह दिवास्वप्न ही होगा। मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि इन भाष्यकारों ने वैदिक ज्ञान विज्ञान का विनाश करके पशुबलि, हिंसा, यौन अपराध, मांसाहार आदि को इस संसार में फैलाने में भारी योगदान दिया है। वेद एवं ब्राह्मण ग्रन्थों का विज्ञान समझना आज असम्भव सा हो गया है। महर्षि दयानन्द के कुछ काल पश्चात् जयपुर के राज पण्डित पं. मधुसूदन ओझा एवं पं. मोतीलाल शास्त्री ने ब्राह्मण ग्रन्थों पर विशाल साहित्य रचा परन्तु रहस्यमय विज्ञान के नाम पर लिखा गया, उनका सम्पूर्ण वाङ्मय विज्ञान से सर्वथा शून्य है क्योंकि पं. मोतीलाल शास्त्री ने स्वयं अपने ग्रन्थ 'दिग्देशकालस्वरूप मीमांसा' पुस्तक के पृष्ठ ४३७ पर आचार मीमांसा प्रकरण में लिखा है- ''वैदिक विज्ञान का आज के भूत विज्ञान से कुछ भी तो साम्य नहीं है।'' यह बात तो उचित है कि वैदिक विज्ञान की परम्परा व क्षेत्र वर्तमान विज्ञान से कुछ पृथक् है परन्तु कोई भी साम्य न होना यह दर्शाता है कि ऐसा वैदिक विज्ञान न तो कभी प्रयोगात्मक हो सकता है और न ही कभी इसका ब्रह्माण्ड के विषय में हो रहे विभिन्न प्रेक्षणों व अनुसंधानों से कोई सम्बन्ध है, तब इससे कोई तकनीक विकसित करना तो सर्वथा दूर की बात है। ऐसी स्थिति में वैदिक भूत विज्ञान क्या केवल वाग्विलास की वस्तु है वा ग्रन्थों की शोभा व मिथ्या आत्म प्रशंसा, वेद प्रशंसा व भारतीय ज्ञान विज्ञान की मिथ्या कथा का साधन? तब इस कोरे कल्पित विज्ञान का मानव जीवन के लिए क्या उपयोग है? यदि वैदिक विज्ञान यही है तो उसे मानने व जानने का कोई अर्थ ही नहीं है। मेरी दृष्टि में हर विज्ञान तीन चरणों में विकसित होता है- **१. मूलभूत भौतिक विज्ञान २. प्रयोगात्मक व प्रक्षेणात्मक विज्ञान ३. तकनीक में परिवर्तित विज्ञान।** मानवजाति के प्रत्यक्ष उपयोग में आने वाला तकनीकी विज्ञान ही है परन्तु इनकी नींव मूलभूत विज्ञान ही है और तना, शाखा व पत्तियां हैं, प्रयोग व प्रेक्षण में उपयुक्त होने वाला विज्ञान। यदि कोई विद्या इन तीनों में से एक भी श्रेणी में नहीं आती है तो वह पदार्थ विद्या कहाने योग्य ही नहीं है। इसी कारण **मैंने वैदिक विज्ञान की लुप्त परम्परा को खोजने व समझने का बीड़ा उठाया है।** मैं आधुनिक भौतिक विज्ञान को भी समझने का यत्न कर रहा हूँ। **भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, मुम्बई एवं टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फण्डामेण्टल रिसर्च, मुम्बई में वर्षों से जा जाकर तथा आधुनिक भौतिक विज्ञान की उच्च स्तरीय पुस्तकों का अवलोकन करके वर्तमान भौतिक विज्ञान की समस्याओं, न्यूनताओं को जानने का प्रयास किया है। जोधपुर की रक्षा प्रयोगशाला एवं राष्ट्रिय भौतिकी प्रयोगशाला दिल्ली के निदेशक स्तर के भौतिकविदों से व्यापक चर्चा की है। सौर वेधशाला उदयपुर एवं इण्डियन सायंस एकेडमी के भौतिक विज्ञानियों की पर्याप्त संगति की है। भारत के विशेष प्रतिभाशाली सृष्टि विज्ञानी प्रो. ए.के. मित्रा, भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, मुम्बई से पिछले दस वर्षों से सतत सम्पर्क रहा है।** उनके अनुसंधान व मेरे विचार कई दृष्टि से मिलते भी रहे हैं। इस कारण वे मुझसे बहुत निकट व आशा भी रखते हैं। अन्य भी कई प्रख्यात वैज्ञानिक मुझसे आश्वस्त हैं। मैंने निष्कर्ष यह निकाला है कि वर्तमान भौतिक विज्ञान अत्यन्त विकसित होते हुए भी अनेक गम्भीर समस्याओं से ग्रस्त

है। **बिग बैंग मॉडल, ब्लैक होल, क्वाण्टम फिजिक्स, गुरुत्व बल, स्पेस, टाइम, बल की अवधारणा, फैलता ब्रह्माण्ड तथा मूल कण ये गम्भीर समस्यायें हैं।** पता नहीं क्यों संसार भर का मीडिया भी बिग बैंग मॉडल व ब्लैक होल तथा स्टीफन हॉकिंग को इतना महत्व देता है? भारतीय खगोलशास्त्री डा. ए.के.मित्रा ने सन् २००४ में ही ब्लैकहोल का खण्डन किया तथा मैंने भी ब्लैक होल विशेषकर बिग बैंग का खण्डन २००४ में किया। हॉकिंग साहब को पत्र भी भेजे। मित्रा साहब के अनेक लेख भी प्रकाशित हुए उन्होंने ब्लैकहोल के स्थान पर ईको मॉडल स्थापित किया परन्तु भारतीय मीडिया भी शान्त रहा। अन्त में स्टीफन हॉकिंग ने कहा ब्लैक होल नहीं होता तो भारतीय मीडिया भी बोल उठा। मैंने हॉकिंग को पत्र लिखा, उसकी कापी भारतीय मीडिया तथा अनेक देशों के वैज्ञानिकों को दी गयी परन्तु कोई प्रभाव नहीं। हाँ, इतना अवश्य है कि यूरोपियन मेडीकल सायंटिस्ट Gergel Furjes MD, Faculty of Public Health, University of Debrecen, Hungary ने कहीं से मेरे हॉकिंग के नाम पत्र पढ़कर कुछ सेकेण्ड में ही अपनी सहमति दर्शाते हुए पत्र लिखा। यदि ए.के. मित्रा विदेश में होते तो उन्हें कदाचित् नोबल पुरस्कार मिल गया होता परन्तु अपना तो देश इण्डिया है। मेरे कहने का तात्पर्य है कि भारत में भारतीयों का सम्मान है ही नहीं। हाँ, **अब श्री मोदी जी के नेतृत्व से मित्रा जी को भी आशा है और मुझे भी कि भारतीय स्वाभिमान जीवित होगा।**

पाठकगण! मैं विशुद्ध वैदिक विज्ञान की बात कर रहा हूँ, रामायण, महाभारत कालीन वैदिक विज्ञान व टैक्नोलोजी की बात कर रहा हूँ। तब **मेरी बात वर्तमान परिवेश में समझ में आना अत्यन्त दुष्कर लगता है। आज रामायण व महाभारत के विज्ञान को भारत का अधिकांश प्रबुद्ध वर्ग कल्पना मान रहा है।** दुर्भाग्य यह है कि कुछ कथित वैदिक विद्वान् भी इन्हें कहानियां ही मान रहे हैं। हाँ, यह बात भी सत्य है कि इन ग्रन्थों में कुछ ऐसे प्रक्षेप भी हैं, जो इन ग्रन्थों को कल्पित व दूषित सिद्ध करते हैं परन्तु हर अज्ञेय बात को प्रक्षेप बताने का भी रोग बढ़ता जा रहा है। **जब तक मैं वैदिक विज्ञान के कुछ सिद्धान्तों को प्रतिपादित करके वर्तमान विज्ञान की कुछ गम्भीर समस्याओं को नहीं सुलझा दूंगा, तब तक मेरी बातों पर यह देश कभी विश्वास नहीं करेगा, फिर विदेशी तो कैसे करेंगे? इस कारण मैं आज देश वासियों को विश्वास दिला रहा हूँ कि वर्तमान विकसित भौतिक विज्ञान की उपर्युक्त समस्याओं का समाधान वैदिक विज्ञान से हो सकेगा, मुझे ऐसा ईश्वर कृपा से विश्वास है। वैदिक विज्ञान अनुसंधान लुप्त परम्परा को मैंने ईशकृपा से खोज लिया है, ऐसा मेरा विश्वास है।** मैं अभी ऋग्वेद के ऐतरेय ब्राह्मण का वैज्ञानिक भाष्य कर रहा हूँ, जो सम्भवतः विश्व में प्रथम बार हो रहा है। यदि किन्हीं महानुभाव को ऐतरेय ब्राह्मण के किसी अन्य वैज्ञानिक (आधिदैविक) भाष्य की जानकारी हो तो देने की कृपा करें। भाष्य पूर्ण होने से पूर्व कुछ भी प्रकाशित वा उद्घाटित नहीं करूंगा। उसके पश्चात् मैं भारत सरकार विशेषकर **प्रधानमंत्री जी से मिलकर बताना चाहूँगा कि भारत जगद्गुरु ऐसे वैदिक विज्ञान द्वारा मार्गदर्शित उच्च विकसित वर्तमान विज्ञानादि विद्याओं के आधार पर बनेगा, जिससे हम वर्तमान अत्यन्त विकसित मूलभूत भौतिक विज्ञान के गम्भीर समस्याओं का समाधान कर सकें। जिसके आधार पर वर्तमान विज्ञान के ब्रह्माण्डीय प्रेक्षण भी संशोधित किये जा सकें। सृष्टि उत्पत्ति, परमाणु व कण भौतिकी के कई रहस्य सुलझ सकें। काल-स्पेस-बल-ऊर्जा के रहस्य उद्घाटित हो सकें। मुझे विश्वास है कि ईशकृपा से अनुकूलता रही तो आगामी ३-४ वर्षों में इस कार्य की नींव रख दूंगा,** फिर भारत सरकार चाहे तो उस पर महल खड़ा करने हेतु इस महत्वाकांक्षी योजना को अपना कर प्रधानमंत्री जी के भारत को जगद्गुरु बनाने तथा मानव संसाधन विकास मंत्राणी श्रीमती स्मृति ईरानी के वेदादि शास्त्र पढ़ने के स्वप्न को साकार कर सकें। ध्यातव्य है कि मेरे यह सब लिखने का अर्थ यह नहीं कि आधुनिक विज्ञान का अध्ययन बंद कर दिया जाये। नहीं-२ यह अध्ययन और भी उच्च स्तर पर हो और **प्रतिभाशाली वैज्ञानिक ही प्रतिभाशाली वैदिक विज्ञानियों के साथ मिलकर वैदिक साहित्य का अध्ययन करें, तभी वैदिक विज्ञान प्रकाशित होगा।** मेरे ऐतरेय ब्राह्मण के भाष्य को अनेक वैदिक विद्वान् समझ ही नहीं पाते हैं जबकि दिल्ली विश्वविद्यालय के भौतिक विज्ञान के सेवानिवृत्त प्रोफेसर डॉ. एम. एम. बजाज जिनकी मैडी-फिजिक्स क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रिय ख्याति है, मेरे पास पधारे तो मेरे भाष्य के दो पृष्ठ खड़े-२ पढ़ कर तत्काल ही बहुत कुछ समझ गये। इस कारण मेरा मत है कि **मेरे भाष्य को भौतिक विज्ञानी एवं वैज्ञानिक प्रतिभा के धनी अध्यात्मवेत्ता ही समझ पायेंगे। उस समय कोई कथित सैक्यूलरवादी वा नास्तिक कोई भी ऐसे वैदिक विज्ञान का विरोध नहीं कर सकेगा,** तब हम संसार को भगवान् मनु के शब्दों में कह सकेंगे-

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

अर्थात् संसार के लोगों को चरित्र व विज्ञान की शिक्षा लेने हेतु भारतीयों के पास आना चाहिए।

अध्यक्ष, श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास
आचार्य, वेद विज्ञान मन्दिर
(वैदिक एवं आधुनिक भौतिक विज्ञान शोध संस्थान)
भागलभीम, भीनमाल, जिला-जालोर
(राजस्थान) भारत पिन- ३४३०२६
दूरभाष- 02969 292103, 09414182173
Website : www.vaidicscience.com
E-mail : swamiagnivrat@gmail.com